पाठ 13. डर पर हुई जीत

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को हर मुश्किल परिस्थिति का मुकाबला साहस और हिम्मत के साथ करने के लिए प्रेरित करना है। बड़े से बड़े डर पर थोड़े-से साहस से आसानी से काबू पाया जा सकता है। हमें घबराना नहीं चाहिए बल्कि बुद्धिमानी एवं साहस से समस्या का समाधान करना चाहिए।

पाठ का सारांश

शाषा और माको फ्रांस में घने जंगलों के किनारे एक गाँव में रहते थे। वहाँ के लोगों का मानना था कि अँधेरा होते ही रास्ते में भूत घूमते हैं। माको शाषा से खेलने के लिए कहता है। शाषा कहती है कि सिर्फ एक बार खेलते हैं। माको छिप जाता है। शाषा उसे इधर-उधर ढूँढ़ते पुराने महल के पीछे एक बगीचे में पहुँच जाती है। वहाँ एक डरावनी शक्ल वाला उसके सामने आकर खड़ा हो गया। उसे देखकर शाषा चिल्लाकर भागने लगी। भूत ने उसे कहा मेरे बगीचे में क्या कर रही हो? उसने कहा कि वह अपने भाई माको को ढूँढ़ रही है। भूत ने कहा कि तुम्हारा भाई इसी बगीचे में है। यदि तुमने उसे पहचान लिया तो तुम उसे ले जा सकती हो और यदि नहीं ढूँढ़ पाई तो वह उसे कभी नहीं मिलेगा। बगीचे में खिले फूलों में से एक फूल पर ओस के कण नहीं थे। इस प्रकार शाषा ने माको को पहचान लिया। पीला फूल गायब होकर वहाँ माको खड़ा था। भूत ने शाषा की तारीफ की और उसने दोनों को उपहार देकर छोड़ दिया। दोनों अपने घर लौट गए।

अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने के लिए कहें। बच्चों से पूछें और समझाएँ–

- उन्हें यह कहानी कैसी लगी?
- यदि वे शाषा की जगह होते तो क्या करते?
- साहस और हिम्मत से संबंधित कोई अन्य कहानी सुनाएँ।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।